किसानोंको तकाबी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओी अंक ४०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १ दिसम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

डमडमकी करुण दुर्घटना

आजकल वायुयानोंके अेकाअेक गिरकर चकनाचूर होने और अुनमें बैठे हुअे सारेके सारे मुसाफिरोंके दिल दहलानेवाले ढंगसे मर जानेकी खबरें लगभग रोजमर्राकी बात हो गओी है। वायुयानकी यात्रा केवल धनी या खुशहाल लोगों तक ही सीमित होनेके कारण अुनमें हमेशा कुछ अैसे लोग तो होते ही हैं, जो सार्वजनिक जीवनमें या व्यापार-व्यवसायके क्षेत्रमें महत्त्वका स्थान रखते हैं। अिनमें अुज्ज्वल भविष्यवाले कुछ सुयोग्य नौजवान भी होते हैं। अक्सर अैसी दुर्घटना पारिवारिक स्वरूपके अनेक दुःख-दर्दोंको जन्म देती है। परिवारोंके अेक या ज्यादा बड़े महत्त्वपूर्ण व्यक्तियोंके अेकाअेक और अप्रत्याशित रूपमें मर जानेसे बचे हुअे लोगोंको कभी न दूर होनेवाला मानसिक आघात पहुंचता है और परिवारकी सारी आर्थिक व्यवस्था अेकदम बिगड़ जाती है।

पिछले सप्ताह डमडमसे थोड़ी दूर पर जो हवाओी दुर्घटना हुओी, अुसमें डाकोटा वायुयानके १३ में से १२ यात्रियोंका करुण अवसान हो गया। वह घटना सम्बन्धित परिवारोंको ही दुःख पहुंचानेवाली नहीं थी; अुससे बहुत बड़ी तादादमें आम जनताको भी आघात पहुंचा है। वह वायुयान दूसरे लोगोंके साथ कुछ प्रसिद्ध पत्रकारोंको भी ले जा रहा था, जो अखिल भारतीय सम्पादक परिषदकी स्टेंडिंग कमेटीकी बैठकमें शरीक होनेको कलकत्ता जा रहे थे। अिन पत्रकारोंमें परिषद्के सभापति श्री देशबन्धु गुप्ता भी थे, जो भारतके अेक प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे अुस प्रबल आन्दोलनके नेता थे, जो भारतीय प्रेसने विधानके संशोधनके खिलाफ और नये प्रेस अेक्टके अमलके खिलाफ हालमें ही चलाया था। यह बहुत कुछ अुन्हींके प्रयत्नोंका फल था कि प्रेस अेक्ट ज्यादा नरम बना और अुसकी अवधि मंत्रि-मंडल द्वारा प्रस्तावित अवधिसे कम रखी गओी। श्री देशबन्धु गुप्ताकी योग्यता और कुशलता अखबारी दुनिया तक ही सीमित नहीं थी। वे पंजाब और दिल्लीके बड़े कांग्रेसी नेता भी थे, और दिल्लीको स्वतंत्र धारासभावाला 'स' वर्गका राज्य बनानेमें अुनका बहुत बड़ा हाथ था। वे वर्तमान संसदके सदस्य थे, लेकिन आगामी चुनावोंमें दिल्ली राज्यकी धारासभामें शामिल होनेके लिअे संसदको छोड़नेका अिरादा रखते थे। अुनके अवसानसे भारतीय पत्र-जगतको भारी क्षति पहुंची है।

वर्धा २४-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

बापूके पत्र मीराके नाम

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ४–०–० डाकखर्च ०–१३–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

हड्डियोंका निर्यात – १

चौरीचोरा (गोरखपुर, अुत्तरप्रदेश) के श्री चेतनदास अेक पुराने और अनुभवी ग्रामसेवक हैं। वे कओी दिनोंसे अनेक अधिकारियों और दूसरे प्रभावशाली व्यक्तियोंका ध्यान हड्डियोंके निर्यातकी घातक नीतिकी ओर खींच रहे हैं। अिस नीतिसे भारतकी खेती और अुसके संभाव्य अुत्पादनको बड़ा नुकसान पहुंचता है। अिस दिशामें श्री चेतनदासजीने जो प्रयत्न किये हैं, अुनकी सूचना अकसर वे मुझे देते रहे हैं। अुन्हें अिसकी सख्त शिकायत है कि सोनेकी भांति बहुमूल्य हड्डियोंके अिन कंकड़ोंको बाहर विदेश भेज दिया जाता है, और सरकारकी नीति अैसी अजीब है कि किसान लोग अपने आसपाससे यदि थोड़ी-बहुत हड्डियां बटोरनेकी कोशिश करें, तो वैसा भी वे कर नहीं सकते।

अुनके अनुरोधसे मैंने अिस विभागके अेकाधिक अधिकारियोंसे पत्र-व्यवहार किया और हड्डियोंके निर्यातकी नीतिका आशय और आर्थिक औचित्य जानना चाहा। अुन सबने अुत्तर लिखनेकी मेहरबानी की, और अपने कारण लिखे। खेद है कि अुनके अुत्तरोंसे मुझे सन्तोष नहीं हो सका है। मैं यहां, अपनी समझके अनुसार, अुनकी दलीलोंका सारांश लिखता हूं:

मवेशियों तथा हाथी, अूंट घोड़ा, गधा, सुअर आदि बड़े जानवरोंसे हमें हर साल छः लाख टनसे ज्यादा हड्डी मिलती है। अिसमें सिर्फ चौथाओी हिस्सा अिकट्ठा हो पाता है और कूटा जाता है। बाकी सब अपनी जगह पड़ा रहता है और नष्ट हो जाता है। वह या तो बहकर नदियों और समुद्रमें चला जाता है या पहाड़ों, घाटियों और रेगिस्तानकी अैसी जगहोंमें पड़ा रहता है, जहां कोओी खेती नहीं होती। अिस तरह वह भूमिको भी अुपजाअू नहीं बनाता। जोतने-बोने योग्य भूमि पर भी जो हड्डी पड़ी रहती है, अुसका भी बहुत छोटा हिस्सा अिकट्ठा होता है। कअियोंकी रायमें अुत्तरप्रदेश और बिहार तथा दूसरे अधिकारियोंकी रायके अनुसार बंगाल, मद्रास और त्रावणकोरके कुछ हिस्सोंको छोड़कर बाकी जगहोंके किसानोंको हड्डीकी खादकी अुपयोगिताकी जानकारी नहीं है, और वे अुसका अुपयोग करनेकी परवाह भी नहीं करते। बड़ी-बड़ी हड्डियां खादके अुपयोगकी नहीं होतीं। अुनका अुपयोग तभी होता है, जब अुनका चूरा बना लिया जाय। लेकिन बड़ी कच्ची हड्डियां अिस रूपमें बाहर नहीं भेंजी जातीं। अुन्हें तोड़कर छोटे-छोटे कंकड़ (grists) बना लिये जाते हैं। अिस तोड़-फोड़की क्रियामें करीब चौथा हिस्सा हड्डीका चूरा (bone-meal) हो जाता है। यह हड्डीका चूरा खादकी तरह अुपयोगी होता है, और अिसलिअे अुसका निर्यात विशेष नहीं किया जाता। सिर्फ कंकड़ों (grists)के निर्यातकी ही अिजाजत

www.vinoba.in

दी जाती है। नीचेके कोष्टकमें हड्डीके निर्यातका पिछले पांच सालोंका ब्यौरा दिया गया है:

हड्डीके कंकड़ों और चूरेके निर्यातका ब्यौरा

(अंक टनोंके सूचक हैं)

	सन् १९४६-४७	१९४७-४८	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१
१. खादके लिअे अुपयोगी हड्डियां	९६७५	३७७२	१७२८	११८१४	१९२६२
२. दूसरी चीजें बनानेके कामकी हड्डियां (कंकड़)	३५६३३	२७६६२	३०३८९	३६५९६	४३२५३
३. हड्डियोंका चूरा	७७७८	७४१६	७०१८	९२८७	८५२९
४. सींगकी हड्डियोंका चूरा	३३२४	१४०४	५४४	९९	२०८०
५. सींग	१६८१	६४५	३०६	४५६	—
जोड़	५८०९१	४०८९९	३९९८५	५८२५२	७३१२४*

बड़ी हड्डियोंका अेकदम चूरा बना डालना और अुसे खादकी तरह काममें लाना, आर्थिक दृष्टिसे अुनका सबसे लाभदायी अुपयोग नहीं है। हड्डियोंके कंकड़ों (grists) की मददसे कअी तरहके रासायनिक द्रव्य, जैसे सरस (ग्लू), 'जिलैटिन' आदि बनते हैं और अुनके अुद्योग खड़े किये जा सकते हैं। अिसके सिवा, अुनसे रासायनिक खाद भी मिल सकती है। किसानोंकी खादकी जरूरत अिन रासायनिक खादोंसे पूरी हो सकती है। रासायनिक खादें सस्ती भी पड़ती हैं। भारतमें अभी अैसे अुद्योग शुरू करनेकी सुविधा नहीं दिखती, और बाहरके देश अपने अुद्योग चलानेके लिअे हमारे यहांसे हड्डियोंके कंकड़ लेते रहना चाहते हैं। वे अिसके लिअे भारी कीमत भी देते हैं। यह कीमत अभी कुछ वर्षोंमें दस गुनी तक बढ़ गअी है। अिसलिअे जो लोग हड्डियां बटोरनेका काम करवाते हैं, अुन्हें मेहनत बहुत मामूली होती है और पैसा खूब मिलता है। वास्तविक बटोरनेका काम हरिजन और वनवासी जातियां करती हैं; अुनका यह अेक धन्धा हो गया है, जिससे अुन्हें काम मिलता रहता है। हड्डियोंके बदले 'सुपरफास्फेट्स' — रासायनिक खाद खरीदी जा सकती है। अेक टन सुपरफास्फेट्सकी जो कीमत है, हड्डियोंके कंकड़ अुससे पांच गुने दाम पर बेचे जा सकते हैं। अगर हम अेक लाख टन हड्डियोंके कंकड़ोंका निर्यात करें, तो हमें जितनी रासायनिक खादकी आवश्यकता है, अुसकी कीमतसे कअी गुना अधिक रुपया मिलेगा, और साथ ही २५ प्रतिशत हड्डीका चूरा भी मिलेगा। अिसलिअे हड्डियोंके कंकड़ोंका निर्यात और रासायनिक खादोंका आयात नफेका सौदा है। अिस व्यापारसे हमें डालर मिलते हैं। और हमें अनाज, रासायनिक खाद और यंत्र आदि खरीदनेके लिअे डालरकी जरूरत तो है ही। अिसलिअे सरकार यह मानती है कि हड्डियोंका निर्यात देशके लिअे लाभदायी और जरूरी है। आखिर बाहरसे अपनी आवश्यकताअें खरीदनेके लिअे हमें भी कुछ तो भेजना ही पड़ेगा। और हम जितनी हड्डीका निर्यात करते हैं, वह अगर पूरा हिसाब करें तो हमारे यहां कुल हड्डी जितनी मिल सकती है, अुसका सिर्फ छोटासा हिस्सा है।

मैं आशा करता हूं कि सरकारका पक्ष मैंने, सरकारी अधिकारियोंसे पत्रव्यवहारके द्वारा जैसा मैंने अुसे समझा है अुसके अनुसार, सही ढंगसे पेश किया है।

* ये आंकड़े पूरे सालके नहीं, बल्कि फरवरीके अन्त तकके हैं। पूरे सालके लिअे जोड़का आंकड़ा ८०००० माना जा सकता है।

अगले अंकमें मैं अिस पर सामान्य अर्थशास्त्र और कृषि-सम्बन्धी विशेष अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे विचार करूंगा।

वर्धा, १२-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

महारोगियोंकी सेवामें नया कदम

कुछ सप्ताह हुअे, महारोगी सेवा मण्डल, दत्तपुर, वर्धाकी ओरसे यह जाहिर किया गया था कि वे शीघ्र ही महारोगियोंकी सेवामें अेक नया कदम अुठाने जा रहे हैं और अिस काममें सामान्य सेवार्थियोंकी तालीमके लिअे अेक शिक्षण केन्द्रकी व्यवस्था कर रहे हैं। २ अक्तूबरको गांधी जयन्तीके अवसर पर कुष्ठ-धाम, दत्तपुरमें श्री किशोरलाल मशरूवालाके हाथों अिस तरहके प्रथम शिक्षण केन्द्रका अुद्घाटन हुआ और यह सूचना कार्यान्वित हुअी।

समारम्भका श्रीगणेश सामूहिक सूत्र-यज्ञसे हुआ। यज्ञ समाप्त होनेको था कि पानी आ गया और फिर तो जोरकी वर्षा हुअी, जो अेक घण्टेसे भी ज्यादा देर तक चलती रही। अिसलिअे सभाको बाहर बनाये गये मंडपसे अुठकर आश्रमके नये भवनमें जाना पड़ा। अिससे सभाके काममें कुछ अव्यवस्था तो हो गअी, लेकिन वर्षाकी अत्यन्त जरूरत थी, अिसलिअे किसीको खेद नहीं हुआ और सारा आयोजन यथाविधि शांतिपूर्वक पूरा हुआ।

सभाका आरम्भ सूरदासके प्रसिद्ध भजन 'सुने री मैंने निर्बलके बल राम' से हुआ। बादमें बाहरसे आये हुअे संदेश सुनाये गये। अिसके पश्चात्, मंडलके मंत्री श्री मनोहर दिवाणने संस्थाके क्रमिक विकासका पिछले पन्द्रह वर्षका अितिहास बताया। याद रहे कि श्री मनोहर दिवाण संस्थाके और अिस कामके प्राण हैं। कामका आरम्भ अुन्होंने अकेले किया था। अिस सेवाके विशेष ज्ञान और साधनोंकी पूंजी भी अुस समय अुनके पास नहीं थी। कुष्ठ-पीड़ितोंके लिअे अुनका प्रेम तथा गांधीजी, विनोबा और अन्य मित्रोंकी सदिच्छायें और प्रोत्साहन, बस यही अुनकी पूंजी थी। लेकिन अुनकी प्रेम और सेवा-भावनाकी यह पूंजी कभी चुकी ही नहीं। अुसके बल पर ही अुन्होंने अिस कामके लिअे आवश्यक पूंजी, पैसा, डॉक्टर, सहकारियोंकी सहायता आदि प्राप्त किये, और खुदने भी अिस कामका योग्य शास्त्रीय ज्ञान हासिल किया। मध्य-प्रदेश सरकारने अुनके काममें दिलचस्पी ली और यथासंभव मदद पहुंचाअी। श्री गांधी-स्मारक निधिने भी रचनात्मक कामके अिस अंग पर विशेष ध्यान देनेका निश्चय किया है और मंडलकी ओरसे यह जो नया अुपक्रम हो रहा है, अुसका अधिकांश श्रेय अिस निधिको ही है।

सामान्य लोगोंको कुष्ठ कामकी तालीम देनेका यह अुपक्रम अिस विषयकी बड़ी योजनाका प्रारम्भमात्र है। श्री मनोहर दिवाणने समझाया कि सामान्य लोगोंको अिस कामकी तालीम देना क्यों जरूरी है। कुष्ठ रोगकी चिकित्सा विशेष योग्यताका काम है, और अुस कामके लिअे योग्य डॉक्टरोंकी जरूरत है। लेकिन अैसे लोग पर्याप्त संख्यामें नहीं मिल रहे हैं। अिसके सिवा, सिर्फ डॉक्टरी ज्ञान ही अिसके लिअे काफी नहीं होता। पीड़ितोंके प्रति दया और सहानुभूति ही पहली योग्यता है। साथ ही अिस रोगके मरीजोंकी शारीरिक हालत अकसर बहुत घिनौनी होती है; अुनका मन और चरित्र भी स्वस्थ नहीं होता। अिसलिअे अुनकी सेवा करनेवाले सेवार्थीको घृणा और जुगुप्सासे मुक्त होना चाहिये। डॉक्टरी तालीम पाये हुअे व्यक्तिमें ये गुण हों ही, अैसी बात तो नहीं है। फिर, ज्यादातर विद्यार्थी — लड़के और लड़कियां — तो डॉक्टरी शिक्षा पैसा कमानेकी दृष्टिसे ही लेते हैं। वे अिस सेवाके काममें तब तक नहीं पड़ना चाहते, जब तक कि अुन्हें कोअी विशेष आर्थिक लाभ न दिया जाय। अिन परिस्थितियोंमें आवश्यकता

www.vinoba.in

अुन व्यक्तियोंकी है, जिनमें दूसरी सारी योग्यताअें हों, सिर्फ अिस विषयके विशेष ज्ञानकी कमी हो। और मरीजोंकी सेवाके लिअे जितना विशेष ज्ञान चाहिये, अुतना पा लेना कुछ विशेष कठिन नहीं है। तब डॉक्टरी विशेषज्ञोंकी आवश्यकता अुनके कामको यहां-वहां पूरा करनेके लिअे ही रह जायगी।

अिस योजनामें अभी ग्यारह विद्यार्थी लिये गये हैं, जिनमें से अुस दिन चार आ सके थे। कुछ विद्यार्थी तो सेवा-काममें कअी वर्ष बिता चुके हैं और अपनी संस्थाओंकी ओरसे यहां अिस कामकी तालीम लेनेके लिअे आये हैं। ज्यादातर विद्यार्थी कॉलेजोंमें विज्ञानका अध्ययन किये हुअे हैं, और आशा है कि वे अिस कामका विशेष ज्ञान और कोशल आसानीसे हस्तगत कर सकेंगे।

दूसरी योजनाके दो भाग हैं। पहलेमें वर्धा तालुकामें पांच गांव चुनकर, वहांकी विशेषताओंके अनुसार प्रयोगकी सावधानियोंका पूरा पालन करते हुअे, तीव्र अनुसन्धानका काम करना है।

अिस सघन कामकी योजनाका लक्ष्य रोगका विकासक्रम तथा अुसकी रोक और निर्मूलनका अुपाय ढूंढ़ना है। अुसमें निम्नलिखित पांच प्रश्नोंका अुत्तर पाना है:

(क) क्या अैसे केस भी, जिनमें त्वचा पर प्रचलित परीक्षाओंसे कीटाणु न पाये जाते हों, केवल ज्ञानतंतुओं पर ही रोगका कुछ प्रभाव हो, संक्रामक होते हैं?

(ख) क्या अैसे मरीजोंको अलग रखना जरूरी है?

(ग) किस तरहके मरीजोंको अलग रखना है? अलग रखनेकी विधि तथा रोगकी रोक-थाम और अुसके विनाशमें अिस विधिकी अुपयोगिता।

(घ) मरीजके रोगकी संक्रामकता पर चिकित्साका प्रभाव।

(ङ) रोगका आरम्भ कैसे होता है, यह जाननेके लिअे संसर्गकी क्रियाका अध्ययन।

काम छोटा नहीं है, और अुसमें कअी वर्ष लगेंगे तब कहीं सही और निश्चित परिणाम मिलेंगे। अिस विभागके अध्यक्ष डॉक्टर वारदेकर, अेम० डी० होंगे। प्रयोग पांच गांवोंमें होंगे। और प्रत्येक प्रयोग विशेष होगा, अुसकी परिस्थितियां अध्ययनके लक्ष्यके अनुसार निर्धारित और नियंत्रित रहेंगी।

पूरी योजनाका दूसरा कार्य पूरे वर्धा तालुकेमें कुष्ठ-रोगका नियंत्रण करना है। अिस कामके लिअे तालुका ग्राम-समूहोंमें बांटा जायगा और हरअेक ग्राम-समूहके लिअे दवाखानेकी व्यवस्था की जायगी। याद रहे कि वर्धामें अिस रोगका काफी जोर है। विस्तृत कामकी अिस योजनामें मुख्य लक्ष्य अैसे सभी काम करनेका है, जो अिस क्षेत्रमें अिस रोगके नियंत्रण और नाशके लिअे जरूरी हों; साथ ही सारे क्षेत्रको अिस रोगसे मुक्त करने और अुससे पैदा हुअे विविध सवालोंको यथासंभव कम समय, खर्च और आदमियोंकी मददसे हल करनेकी व्यवहार-सुलभ कार्यपद्धतिकी रचना भी करनी है। कार्यपद्धति अैसी होनी चाहिये कि आवश्यक परिवर्तनके साथ दूसरी तहसीलोंमें, जहां रोगका ज्यादा प्रसार है, अुसका प्रयोग किया जा सके।

श्री मनोहर दिवाणके भाषणके बाद डॉ० शर्माने दत्तपुर आश्रमकी संक्षिप्त रिपोर्ट बताअी। आश्रममें १५३ मरीज हैं, ९६ पुरुष और ५७ स्त्रियां। आश्रम बाहरके मरीजोंकी चिकित्साकी व्यवस्था भी करता है। पिछले साल अैसे रोगियोंकी संख्या ९३७ रही और औसत साप्ताहिक अुपस्थिति ३०२। डॉ० शर्माने दाताओंकी सूची भी पढ़कर सुनाअी। मौजूदा वार्षिक खर्च ३३,००० रु० है। अुन्होंने कहा कि अिस कामकी मांग बहुत ज्यादा है, लेकिन काम तो जितना पैसा मिलेगा, अुतना ही बढ़ सकेगा। अतः संस्था हरअेक पाअीका स्वागत करेगी।

श्री मशरूवालाने योजनाका प्रवर्तन करते हुअे कहा कि यह परमेश्वरकी बड़ी दया है कि हम गांधीजीका प्रिय कताअी कार्यक्रम निर्विघ्न पूरा कर पाये; और ज्यों ही कार्यक्रम पूरा हुआ, त्यों ही खूब वर्षा आ गअी, जिसकी हमारी देहाती जनता बहुत प्रतीक्षा कर रही थी। वर्षासे हमारी बैठनेकी व्यवस्थामें कुछ गड़बड़ हुअी है और कुछ भाअी-बहन, जो यहां सभाके लिअे आये थे, बिलकुल भीग गये हैं, लेकिन अुससे हमारे असंख्य किसानों, मजदूरों और पशुओंको आनन्द हुआ है। वे पानीके लिअे व्याकुल थे और अुसके अभावमें अुन्हें दुर्भिक्षका डर लग रहा था।

अुन्होंने अिस क्षेत्रमें, भारतमें तथा दुनियाके अन्य देशोंमें अीसाअी धर्मप्रचारकोंकी सेवाका कृतज्ञतापूर्वक अुल्लेख किया और कहा: अैतिहासिक कहते हैं कि वेद तकमें अिस रोगका वर्णन आता है। बेशक, माताओं या पतियों, लड़के-लड़कियों या दूसरे सम्बन्धियों द्वारा व्यक्तिशः अिन रोगियोंकी सेवाके अनेक अुदाहरण हर समय मौजूद रहे होंगे। अुन्होंने अपनी रक्षाकी परवाह न करके अपने अिन अभागे प्रेमभाजनोंकी अनुकरणीय सेवा की होगी। लेकिन यह श्रेय तो दुनियाके अितिहासमें अीसाको ही है कि अुन्होंने अेक अैसा भक्तिमार्ग चलाया, जिसमें जीवधारियोंकी — खासकर रोग, गरीबी और अज्ञानसे पीड़ित अपने मानव-बन्धुओंकी — सेवाको मोक्षकी साधनाका अंग माना गया। भारतमें अैसे अनेक भक्ति-मार्ग हैं, जिनमें भक्त दिनभर अपने जागरणका सारा समय भक्तिके अनुष्ठानमें ही लगाता है। लेकिन सामान्यतः भक्तिका यह सारा कार्यक्रम घरमें या मंदिरमें आसीन अपने अिष्ट देवताकी मूर्तिको लेकर ही होता रहता है। प्राणियोंकी — मनुष्यों या पशुओंकी — सेवा पर अैसा जोर नहीं दिया गया कि यह भी मोक्षकी प्राप्तिका अेक अुपाय है। यह काम तो अीसाने ही किया।

श्री मशरूवालाने कार्यकर्ताओंको मिशनरी लोगोंसे अेक दूसरा सबक लेनेके लिअे भी कहा। आजकल वे लोग अपने लिअे जो भी सेवा चुनते हैं — कुष्ठ या क्षयकी चिकित्सा, डॉक्टरी, शिक्षा या कोअी दूसरी चीज — अुसकी विशेष व्यावहारिक तालीम वे लेते हैं, और आजके नये-से-नये साधनोंका अुपयोग भी करते हैं। लेकिन भक्त मिशनरी अपना सारा विश्वास अिन बाहरी साधनोंमें ही केन्द्रित नहीं कर रखता। वह अपने प्रयत्नमें हर कदम पर भगवान्की करुणाकी याचना भी करता रहता है। वह मरीजसे भी प्रार्थना करनेके लिअे कहता है, ताकि ये साधन फलदायी हों। तो यह निष्ठा चाहिये। विज्ञानके साधनोंका प्रयोग करें, पर यह निष्ठा अुससे भी ज्यादा जरूरी है। श्री मशरूवालाने श्रोताओंको याद दिलाया कि गांधीजी अन्तमें अिस निष्कर्ष पर आ गये थे कि प्राकृतिक चिकित्साका सार राम-नाममें ही है। मिट्टी, पानी और दूसरे तत्त्व, जिनसे वे चिकित्सामें काम लेते थे, अुनके लिअे गौण हो गये थे।

श्री मशरूवालाने कहा कि भक्तके लिअे दवाअियोंके अुपयोगका कोअी निषेध नहीं है, और न अुन्हें भक्तके लिअे त्याज्य ही मानना है। दवाअियोंको यानी अुनके रोगनाशक गुणोंको भी भगवान्ने ही बनाया है। मनुष्यने तो अुन्हें सिर्फ खोज लिया है — कभी संयोगसे, कभी बुद्धि और श्रमपूर्ण अनुसन्धानसे। चोलमोगरा, सल्फोन या दूसरी दवाअियोंमें जो खूबी है, वह मनुष्यकृत नहीं है। वह तो भगवान्की कृति है। मनुष्यने अुसे ही बाहर अनेक रूपोंमें प्रकट कर लिया है। अिसलिअे अपने ज्ञान और साधनोंकी सीमा तक वह अुनका अुपयोग करे और नयी-नयी दवायें खोजनेमें अपनी बुद्धि लगाये यह तो ठीक है। लेकिन अुसे याद रखना चाहिये कि वह किसी दवामें से कोअी अैसा गुण नहीं प्रगट कर सकता, जिसे भगवान्के वरद हाथने वहां पहलेसे ही नहीं रख दिया हो।

www.vinoba.in

अिसलिअे अगर दवाका अुपयोग करते हुअे डॉक्टर और मरीज दोनों भगवान्‌के आशीर्वादकी कामना करें, तो दवा ज्यादा कारगर होगी। सच तो यह है कि निष्ठा दवासे कहीं ज्यादा फलवती है, क्योंकि निष्ठाके जरिये हम चाहें तो किसी चीजमें अैसा गुण भी रख सकते हैं, जो अुसमें नहीं है। मिशनरियोंके सेवा-कामकी यह अेक प्रशंसनीय और अनुकरणीय विशेषता है, यद्यपि अुसमें लोगोंका धर्मान्तर करनेकी अिच्छासे दोष आता है।

अीसाकी शिक्षाकी यह विशेषता भारतमें गांधीजी लाये। और हिन्दू भक्तिमार्गको अुनकी यह अनुपम देन है। अिसमें धर्मान्तर करनेकी अिच्छाका दोष भी नहीं है। लेकिन भक्तिमें भक्तिकी विशेषता होनी चाहिये। भक्ति भगवान्‌की प्राप्तिका साधन है, तो हमारी सेवा भी अिसी भावनासे की जाय। अन्यथा, श्री मशरूवालाने कहा, वह अेक अुदार भावनाका या अेक विशेष योग्यताका काम होकर रह जायगी।

सभा धन्यवादके साथ विसर्जित हुअी।

(अंग्रेजीसे) जो०

हरिजनसेवक

१ दिसम्बर **१९५१**

किसानोंको तकाबी

बम्बअी राज्यसे अेक भाअी लिखते हैं:

"सिर पर खड़े अकालकी भयंकरताका खयाल करते हुअे बम्बअी सरकारने अिस बातका विचार अवश्य किया होगा कि परिस्थितिका मुकाबला करनेके लिअे वह क्या कदम अुठायेगी। वह जो भी कदम अुठाये, अुसमें तकाबी बांटनेका काम तो रहेगा ही। मेरी सूचना है कि तकाबी, जब अुसका ठीक लाभ लिया जा सके तभी — यथासमय बांट दी जाय, अुसमें अनुचित देर न हो और अैसी व्यवस्था की जाय कि मंजूर की हुअी रकम निश्चित व्यक्तिके हाथमें यथाशीघ्र और निश्चयपूर्वक पहुंच ही जाय। तलाटियों — पटवारिओं — और सर्किल अिन्स्पेक्टरों द्वारा तकाबीके वितरणकी व्यवस्थाका पुराना अनुभव संतोषजनक नहीं रहा है। मंजूर की हुअी रकम किसानोंको न तो समय पर मिली है, और न पूरी ही। अपनी रकम लेनेके लिअे अुन्हें पहले तलाटियों और सर्किल अिन्स्पेक्टरोंकी मुट्ठी गरम करना पड़ती है।

"मेरी सूचना है कि यह रकम कोअी गज़टेड सरकारी अधिकारी अपनी अुपस्थितिमें और तालुका या जिलेके किसी स्थानीय रचनात्मक कार्यकर्ता या रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी संस्था द्वारा सिफारिश किये गये व्यक्तिकी अुपस्थितिमें खुद दिलवाये।

"दूसरे, यह कर्ज लेनेके लिअे किसानोंको दूर-दूरसे किसी अेक जगह आने और पूरा दिन या अुससे भी ज्यादा समय बरबाद करनेके लिअे मजबूर न किया जाय। अधिकारी खुद गांव-गांव घूमकर अुसका वितरण करें या कमसे कम अिस कामके लिअे कोअी अैसी जगह चुनें, जो अुन गांवोंसे ज्यादा दूर न हो, जिनके निवासियोंको तकाबी बांटना हो। अिसके सिवा, अपने दूसरे कामोंकी बनिस्बत वे पहले अिसी कामको निपटायें; पहले किसानोंकी तकाबी सम्बन्धी अर्जियों पर विचार करें और निर्णयके अनुसार पैसा दिलवायें।"

मुझे लगा कि ये सूचनायें ठीक हैं, अिसलिअे मैंने अिस विषयमें बम्बअी सरकारको लिखा। वहांके माल-विभागने मुझे विस्तृत जवाब दिया है। अुस जवाबके आवश्यक अंश मैं यहां देता हूं:

"तकावीकी रकम बांटनेका काम गज़टेड सरकारी अधिकारीकी निगरानीमें और किसी स्थानीय रचनात्मक कार्यकर्ता या रचनात्मक संस्थाने जिसकी सिफारिश की हो, अैसे किसी व्यक्तिकी अुपस्थितिमें होना चाहिये — आपकी अिस सूचनाके विषयमें निवेदन है कि तकावीका पैसा बांटनेका काम अभी सरकारी खजानेका अव्वल कारकुन करता है। यह काम तालुकेकी राजधानीमें होता है। तालुकेमें मामलतदार ही गज़टेड अधिकारी होता है। लेकिन अुसे दूसरे अनेक काम रहते हैं, अिसलिअे वह हमेशा अुस पर अपनी वैयक्तिक निगरानी नहीं रख सकता। मामलतदार अगर अुस समय तालुकेकी राजधानीमें होता है, तो वह जरूर अिस कामको देखता है। अुसकी गैरहाजिरीमें अिस कामकी व्यवस्था अकाल-सम्बन्धी कामकाज देखनेवाला मामलतदार या महालकरी या अव्वल कारकुन करता है। गांवके सरकारी कर्मचारी (Village Officers) तकावी बांटनेका काम नहीं करते। वे तो सिर्फ अुन आदमियोंको पहिचानने और साख भरनेका काम करते हैं, जिन्हें तकावी दी जाती है। तकाबीदारोंको पहिचानने और तत्सम्बन्धी अिकरारनामा भरवानेके लिअे गांवोंके अिन कर्मचारियोंकी अुपस्थिति तो वहां जरूरी है, लेकिन अुनके साथ स्थानीय लोकमतका प्रतिनिधित्व करनेवाले कुछ प्रमुख लोग और दूसरे रचनात्मक कार्यकर्ता भी अगर वहां हाजिर रहना चाहते हैं, तो रह सकते हैं; अुसमें कोअी आपत्तिकी बात नहीं है।

"आपकी दूसरी सूचनाके विषयमें मुझे यह कहना है कि तकाबी बांटनेकी आजकल तीन पद्धतियां प्रचलित हैं:

(क) तालुका कचहरीमें रुपया सीधा तकाबीदारको सौंप दिया जाता है।

(ख) अगर तकाबीदार कहे, तो मनीआर्डरसे भेज़ दिया जाता है।

(ग) वह जहां रहता है, अुसी गांवमें जाकर अुसे दिया जाता है।

"तकाबीदारके गांवमें जाकर अुसे तकाबी देना तो तभी होता है, जब यह जरूरी जान पड़ता है या आसानीसे किया जा सकता है। अिसलिअे बहुत मुमकिन है कि अैसा हमेशा न होता हो। अतः अिस कामसे सम्बन्ध रखनेवाले कर्मचारियोंको हम यह ताकीद कर रहे हैं कि वे यथासंभव तकाबीदारको अुसके गांवमें ही तकाबी दिलवानेकी व्यवस्था करें। लेकिन **अैसा करना न तो हमेशा संभव होगा और न वांछनीय ही;** खासकर अैसे मामलोंमें, जहां गांवोंमें ज्यादा रुपया लेकर जाना खतरनाक हो या जहां तकाबीदार तालुकेके खजाने तक आसानीसे जा सकता हो।

"आपकी तीसरी सूचना यह है कि तकाबीके कामको दूसरे कामोंके बजाय प्रधानता मिलनी चाहिये। अिसके विषयमें वर्तमान नियम यह है कि माल-विभागके अधिकारियोंको यह आदेश है कि वे तकाबीकी अर्जीका फैसला अर्जी आनेके तीस दिनके भीतर कर डालें। फैसला करनेके सिलसिलेमें बहुतसी छानबीन होती है: प्रार्थीको सचमुच तकाबीकी जरूरत है या नहीं, अुसकी कर्ज चुकानेकी क्षमता, कैसी और कितनी जमानत मिल रही है, आदि। और अिसमें समय लगता है।

www.vinoba.in

काम जितनी जल्दी हो सके, अुतनी जल्दी किया जाता है। समय-समय पर जिला-अधिकारियोंको हिदायत की जाती है कि वे अिसकी खबरदारी रखें कि अुनके मातहत कर्मचारी तकाबीकी अर्जियां जल्दी निपटायें।"

मामलतदारकी वैयक्तिक निगरानीमें ही तकाबीकी रकम बांटनेमें कठिनाअी है, यह बात मैं समझा। अिसलिअे मैंने सूचना की कि यह काम जब गज़टेड अधिकारीकी अपेक्षा किसी कम दर्जेके कर्मचारीको सौंपा जाय, तब किसी स्थानीय रचनात्मक कार्यकर्ता या रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी संस्था जिसकी सिफारिश करे, अैसे किसी व्यक्तिकी अुपस्थितिमें ही तकावीदारोंको रकम बांटना लाज़िमी किया जाय।

अिस पर सरकारने यह जवाब दिया है:

"तकाबीकी रकम बांटनेका काम यदि गज़टेड अधिकारीकी अपेक्षा किसी कम दर्जेके कर्मचारीको सौंपा जाय, तब रकम बांटनेका काम किसी रचनात्मक कार्यकर्ताकी ही अुपस्थितिमें हो, यह बात जरूरी नहीं जान पड़ती। लेकिन अैसे लोग चाहें तो सम्बन्धित अधिकारियोंसे अिस आयोजनके समय और स्थानकी जानकारी ले सकते हैं और अुन्हें सूचना दे सकते हैं कि हम अुस समय वहां हाजिर रहना चाहेंगे। अिसमें सरकारको कोअी आपत्ति नहीं है।"

मैं सरकारके अिस दृष्टिकोणको समझ सकता हूं और अुसकी कोअी शिकायत करना नहीं चाहता। अब यह सर्वोदय-सेवकों और रचनात्मक कार्यकर्ताओंका काम है कि वे समाज-सेवाके अिस कामको अपनी अिच्छासे अुठायें। आखिर मक्कारी और बेअीमानीका अिलाज लम्बी-चौड़ी और कृत्रिम सावधानियोंमें नहीं मिल सकता। सरकारी अधिकारियोंके कामको हम जितना अधिक जटिल बनाते हैं, अुसे निर्दोष बनानेके लिअे जितने ज्यादा प्रतिबन्ध लगाते हैं, काम अुतनी ही देरसे होता है और छल-कपटकी कला भी अुतनी ही सूक्ष्म बनती है। हममें अभी अितना साहस नहीं है कि हम सारी सावधानियां छोड़ दें और जब तक यह प्रगट न हो जाय कि अमुक व्यक्ति विश्वासके योग्य नहीं है, तब तक अुस पर पूरा विश्वास करते रहें। अिसलिअे हम अुलटी राह चलते हैं और तब तक किसी आदमीका विश्वास नहीं करते, जब तक वह अपनी विश्वसनीयता प्रमाणित नहीं कर देता; अिसलिअे हम हरअेक व्यक्तिकी निगरानी करना और अुस पर नियंत्रण रखना जरूरी मानते हैं। मनुष्यकी आजकी नैतिक अवस्थामें अैसा करना अनिवार्य हो सकता है। लेकिन ये सारी सावधानियां और प्रतिबन्ध जितने कम हों, अुतना अच्छा। बहुत लम्बी-चौड़ी और सूक्ष्म सावधानियां ढूंढ़नेमें अपनी चतुराअी लगाना बेकार है। विनोबाके शब्दोंमें हम जिसे 'विश्वस्त-वृत्ति' कहते हैं, अुसे प्रोत्साहन देना ही चाहिये, फिर चाहे अुसमें कुछ खतरा भी अुठाना पड़े। मैं अैसे कअी लोगोंको जानता हूं, जो आदतन् धोखा देने और ठगनेके लिअे मशहूर थे। लेकिन जब अुनका पूरा विश्वास किया गया, तो अुन्होंने अपना काम पूरी अीमानदारीसे किया। सहज विश्वासकी अिस मनुजोचित प्रवृत्तिको अपनाकर सरकारी अधिकारियों और जनताकी नैतिक अुन्नतिके प्रयत्नका हम अेक नया अध्याय क्यों न शुरू करें?

किसानोंको तकाबी तथा दूसरी सहायता देनेका सवाल बम्बअीके सिवा दूसरे राज्योंमें भी है ही। मैं अुम्मीद करता हूं कि प्रत्येक राज्यकी सरकार जनताके सच्चे सेवकोंकी-सी वृत्तिसे अपने किसानोंकी सुविधाओंका पूरा-पूरा खयाल रखेगी।

वर्धा, १९-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—६

विन्ध्यप्रदेशमें

विन्ध्यप्रदेशके कार्यकर्ताओंका आग्रह मानकर हम लोगोंने ता० ११ अक्तूबरके दिन अुत्तर भारतकी यात्राका सीधा मार्ग छोड़ा और विन्ध्यकी सीमामें प्रवेश किया। हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी टीकमगढ़में गत चौदह वर्षोंसे काम कर रहे हैं। तरुणोंका अेक अुत्साही दल अुनके साथ है और अुनकी मंदद करता है। श्री चतुर्वेदी प्रिन्स क्रोपाटकिनके भक्त हैं। गांधी-विचार-धाराका अुन्होंने गहरा अध्ययन किया है और अुसके आलोचक भी रहे हैं। विनोबाके साहित्यका अुन्होंने पूरे दो सप्ताह तक अेकाग्र अध्ययन किया और अुनके लेखों तथा भाषणोंसे वे अितने प्रभावित हुअे कि अश्रद्धाका सारा कोहरा दूर हो गया और अहिंसामें अुनका विश्वास दृढ़तर हो गया।

अुन्होंने विनोबाको गांधी-भवन दिखाया और अुसके अुद्देश्य तथा कार्यका परिचय कराया। यह गांधी-भवन गांधीजीकी स्मृति-रक्षाके लिअे दी हुअी टीकमगढ़के महाराजकी देन है। स्थानका प्राकृतिक सौंदर्य दर्शनीय है। कलकल नाद करते झरने, प्रपात, और मनोरम वनश्री, — प्रकृतिकी अैसी अपूर्व शोभा अुसके चारों ओर बिखरी हुअी है; फिर, भवनमें चतुर्वेदीजीको लिखे हुअे गांधीजी तथा दीनबन्धु अेंड्रूजके पत्रोंका बहुमूल्य और बड़ा संग्रह है। देखकर आंखें और मन दोनों भर गये। बनारसीदासजीका विचार है कि विनोबाके हालके लेखों और भाषणोंको छोटी-छोटी पुस्तिकाओं या ट्रेक्टोंके रूपमें प्रकाशित कराया जाय, और अिस तरह अिस साहित्यका व्यापक प्रचार किया जाय। वे अिसे साहित्य-सदाव्रत कहते हैं। अपनी अिस योजनाके विषयमें अुनका अितना अुत्साह था और अुसकी सफलतामें अुनका अैसा विश्वास था, कि विनोबाजी अपनी सहमति दिये बिना नहीं रह सके। आशा है, यह योजना भूदान-यज्ञमें सहायक सिद्ध होगी।

विन्ध्यप्रदेश आजादी-पूर्व कालकी ३४ रियासतोंको मिलाकर बनाया गया अेक नया प्रान्त है। रीवा अिन रियासतोंमें सबसे बड़ी थी। वह हिस्सा बघेलखंड कहलाता है। शेष ३३ रियासतें बुंदेलखंडकी थीं। बुन्देलखंड भारतीय अितिहासमें अपनी वीरताके लिअे प्रसिद्ध रहा है। छत्रसाल और लक्ष्मीबाअी अिसी प्रदेशमें हुअे। आधुनिक कालके अनेक प्रसिद्ध हिन्दी कवियों — श्री मैथिलीशरण गुप्त, वियोगी हरि, घासीराम व्यास, घनश्यामदास पांडे आदि — की जन्मभूमि होनेका गौरव भी अुसे प्राप्त है। श्री व्यास और पांडेके गीत हिन्दीमें खूब प्रसिद्ध हैं। विन्ध्यप्रदेशके गौरव-गीतकी तरह श्री वियोगी हरिका निम्नलिखित छन्द विन्ध्यवासियोंका राष्ट्रीय गीत जैसा है:

"अित जमना, अुत नर्मदा; अित चंबल अुत टौंस।
छत्रसाल सी लरनकी, रही न काहू हौंस॥
यह सुभूमि सोणित-सनी, यह पहाड़ यह धार।
हम बुंदेलखंडीनको, ये ही स्वर्ग-विहार॥
अितहूँ तो रणचंडिका, खेली अगणित खेल।
राजस्थानसौं कम नहीं, अमर खंड-बुंदेल॥"

विन्ध्यप्रांतके सरोवर, सरोवरोंमें खिल रहे कमल, अुसकी वनराजि, फल और मधु — सब अनुपम हैं। अुसकी प्राकृतिक और खनिज सम्पत्तिकी ठीक जांच-पड़ताल अभी नहीं हुअी है। सघन वनभूमिकी आबादी बहुत विरल है। भारतकी औसत आबादी ३१३ प्रति वर्गमील है, यहांकी सिर्फ १४७ प्रति वर्गमील।

कार्यकर्ताओंकी अिच्छा तो बहुत थी कि विनोबा वहां जायं, फिर भी अुन्हें संकोच होता था। वहां सड़कें प्रायः नहीं हैं, अिसके सिवा, १० अक्तूबरके आसपास पानी बरसनेकी भी संभावना थी;

www.vinoba.in

अुन्हें लगता था कि अैसी स्थितिमें प्रदेशके भीतर वन और पहाड़ियोंके अटपटे मार्गसे चलनेमें विनोबाको कष्ट होगा। पर साथ ही श्री बनारसीदासजी और पाठकजी यह तो चाहते थे कि विनोबा अेक बार यहांकी गरीबी और-दुःख अपनी आंखों देख लें। बापूजी वहां कभी नहीं पहुंच पाये। ठक्कर बापा अेक बार कुछ दिनके लिअे पहुंच गये थे। विनोबाको दिल्ली भरसक जल्दी पहुंचना था, और विन्ध्यप्रदेश अुनके मार्गमें नहीं आता था। लेकिन 'सब-हरा' जनताके दुःखोंके साथ स्पन्दित होनेवाला विनोबाका हृदय विन्ध्य-वासियोंकी पुकार टाल नहीं सका। यह अच्छा ही हुआ। विन्ध्य-प्रदेशकी जनताकी दशा सचमुच बड़ी करुण है। अपना सारा आवश्यक अन्न यद्यपि वे लोग खुद पैदा कर सकते हैं, तब भी गरीबी अितनी ज्यादा है कि वे चैत और वैशाखमें जब कटनीका समय आता है, तब मजदूरीके लिअे महीनों तक अुत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेशमें दर-दूर तक मारे-मारे फिरते हैं। अिन मजदूरोंको 'चैतुआ' कहते हैं। बच्चे, बूढ़े, युवक तथा स्त्रियां हजारोंकी संख्यामें नन्हें-नन्हें शिशुओंको टोकनीमें सिर पर लिये घर छोड़कर चल देते हैं। प्रान्तमें अत्यन्त घटिया किस्मका अन्न पैदा होता है। पोषक तत्त्वोंकी अुसमें अितनी कमी होती है कि वह खाने योग्य नहीं होता और नुकसान भी करता है। अैसे अखाद्य धान्योंकी सूची क्रमानुसार यहां दी जाती है। पहला सबसे अधिक खराब होता है:

फिकार या लठारा	७	सेर प्रति रुपया
कनवानी	"	" " "
राली	"	" " "
समा	"	" " "
कुटकी	४	" " "
कोदों	५	" " "
कुदअी	२	" " "

लोग अिन अनाजोंको पैदा करते हैं, खाते हैं और अपना स्वास्थ्य खराब करते हैं। बीज, खाद और सिंचाअीकी सुविधा मिले, तो ये ही लोग भरपूर गेहूं और चावल पैदा कर सकते हैं। अैसी सुविधाअें अुन्हें तुरन्त दी जानी चाहियें। पुराने तालाबोंका अुद्धार हो जाय, जो आसानीसे किया जा सकता है, तो काफी जमीन पर सिंचाअीकी समृद्ध खेती हो सकती है। जेवरामें ग्रामीणोंका अेक दल विनोबाके पास यह अर्जी लेकर आया कि अुनके गांवका तालाब सुधार दिया जाय। अिस तालाबकी मरम्मत हो जाय, तो करीब ४०० अेकड़ भूमिकी सिंचाअी हो सकेगी। वे चाहते थे कि काम सरकारकी ओरसे हो। विनोबाने कहा: "तुम लोग अिस काममें स्वेच्छासे अपना परिश्रम देनेको राजी हो जाओ, तो बाकी खर्च मैं सरकारसे करनेके लिअे कहूंगा।" वे लोग सहमत हो गये, और अुनका प्रार्थना-पत्र अुचित अधिकारियोंके पास भेज दिया गया। लेकिन अिस कामके लिअे अिस तरह दूसरे अनेक गांवोंको अुत्साहित किया जा सकता है, और कितने ही तालाबोंका पुनरुद्धार हो सकता है।

विन्ध्यप्रदेशमें चलते हुअे हमारे पांच दिन बीते। २०४ दाताओंसे ८०० अेकड़ भूमि मिली। हमसे कहा गया था कि वहां भूदानकी कोअी अुम्मीद नहीं है, क्योंकि जमींदारी नहीं है। अतः अितना दान कम नहीं हुआ। विनोबाजी मनुष्य-स्वभावको ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं और यह भी जानते हैं कि जमींदारी न रहे और सारी जमीन सरकारकी हो, तब भी किसानोंमें छोटे-बड़ेका फर्क तो होगा ही, और अनेक अैसे भी होंगे जिनके पास कोअी जमीन नहीं और अनिश्चित मजदूरी ही जिनके जीवन-निर्वाहका साधन होगी। रैयत-वारी प्रथा होते हुअे भी ३३ प्रतिशत जमीन जागीरदारोंके हाथमें है। यह सच है कि सरकारने कह रखा है कि जिसे जरूरत हो, अुसे वह जमीन देगी। लेकिन अुसके लिअे विधिपूर्वक अर्जी देनी पड़ती है, और अेक ही जमीनके लिअे अेकसे ज्यादा अर्जियां हों, तो जमीनका नीलाम होता है। और नीलाम होने पर तो जमीन पैसेवालेको ही मिलती है। अिस तरह सैकड़ों अेकड़ जमीन अैसे लोगोंके हाथमें पहुंच गअी है, जो खुद काश्त नहीं करते। अिस तरह अेक नये किस्मकी जमींदारी बनती जा रही है। पंडित बनारसी-दासजीने बताया कि अुनके लड़केने ही अुनके विरोध करनेके बावजूद अिस तरह बहुतसी जमीन खरीद ली है, हालांकि खुद खेतीमें जुटनेका अुसका कोअी अिरादा नहीं है।

विनोबाने सरकारी अधिकारियोंसे कहा: "गांववालोंके पास खुद जाकर बेजमीन लोगोंको जमीन बांटना चाहिये। क्या आप या आपके आदमी अैसा करते हैं? भूमिहीनोंको ढूंढ़-ढूंढ़कर अुन्हें जमीन बांटना है। हम अपनी लड़कियोंकी शादी करते हैं, तो कन्याको अलंकार भी देते हैं। अिसी तरह जमीनके साथ पात्र किसानको कुआं, बैल और बीज आदि भी देना चाहिये। साधन मिलेंगे, तो वे जमीन स्वीकार करेंगे। आप लोग अपढ़ किसानोंसे यह आशा नहीं कर सकते कि सरकारी कायदे-कानूनके अनुसार वे आपसे जमीन मांगने आयेंगे।" सरकारी अधिकारियोंकी शिकायत थी कि सरकारी घोषणाके बावजूद जमीनकी मांग नहीं हो रही है। सभामें जब यह सवाल अुठा, तो लोग खड़े हो गये और अुन्होंने कहा कि अुन्हें ज़मीन चाहिये। लेकिन सरकारी कर्मचारियोंके हाथसे अुन्हें जमीन नहीं मिल सकती। वे अुनकी राहमें तरह-तरहकी अड़चनें डालते हैं।

अूपर मैं यह बता चुका हूं कि सिंचाअी अिस प्रदेशकी पहली आवश्यकता है। अुचित और पर्याप्त सिंचाअी हो, तो यह प्रदेश अन्नका भण्डार हो जायगा। पण्डित चतुर्वेदीने बड़े दुःखके साथ बताया कि सिंचाअीके अभावमें संतरेके हजारों झाड़ सूख गये। अुन्हें लगा मानो अुचित पोषणके अभावमें अितने बालक खो दिये गये। अुनकी दृष्टिमें बंगालके भयंकर अकाल और संतरेके वृक्षोंकी बरबादीमें कोअी फर्क नहीं था।

गो-संवर्द्धन और ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे यहां खूब अवकाश है। गाय-बैलोंकी संख्या बहुत है, लेकिन गुणकी दृष्टिसे वे घटिया हैं। खेतीके लिअे बैल बाहरसे खरीदकर लाये जाते हैं और दूधकी औसत मात्रा प्रति गाय आध सेरसे भी कम है। नस्ल सुधारकी कोअी वैज्ञानिक व्यवस्था नहीं है। सरकार सांड़ोंका अिन्तजाम भी नहीं करती।

पृथ्वीपुरमें ३५ तेल-घानियां हैं। कुछ ही साल पहले अुनकी संख्या १०० थी। विनोबा खुद घानियोंकी हालत देखनेके लिअे गये। अुनकी हालत खराब है, और वह तब तक नहीं सुधर सकती, जब तक कि अुनका संगठन सहकारिताके आधार पर न किया जाय, और अुन्हें अुस तरह काम करनेकी शिक्षा न दी जाय। बुनकर मिलोंके सूत पर निर्भर करते हैं। सरौता, लकड़ीके खिलौने, कम्बल आदि बनानेके दूसरे ग्रामीण धंधे नष्ट हो गये हैं, क्योंकि बाहरसे सस्ता माल आने लगा और अुन्हें संरक्षण नहीं मिला।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी श्रीमती मारज़ोरी साअिक्सकी सलाहसे बुनियादी तालीमकी अेक योजना बनाअी गअी है। हर साल सरकारकी ओरसे अुसके लिअे २५००० रुपये मंजूर किये जाते हैं, और हर साल वे सरकारके पास ही पड़े रहते हैं, क्योंकि अुसे चलानेकी दूसरी सुविधाओंकी व्यवस्था नहीं हो पाती। पण्डित चतुर्वेदीने गांधी-भवनको बुनियादी शिक्षाका केन्द्र बनानेकी पूरी कोशिश की, पर आखिर वे आशा छोड़ बैठे। वे अितने अूब गये थे कि अुन्होंने विन्ध्यप्रदेश छोड़ने और दूसरी जगह जा बसनेका निश्चय कर लिया था। पर विनोबाने जब अुन्हें समझाया कि जहां आपने अितनी सेवा की है, वह जगह आपको नहीं छोड़नी चाहिये,

www.vinoba.in

तो वे मान गये। यह सुखद समाचार जब सभामें सुनाया गया, तब लोग बहुत खुश हुअे। कार्यकर्ताओंने अिस बातके लिअे विनोबाका बहुत अहसान माना।

अपने प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने समझाया कि अिस यज्ञ और यात्राके द्वारा वे किस तरह देशका वातावरण बदल देना चाहते हैं। अुन्होंने अनेक अुदाहरण देकर बताया कि जमींदारोंका मानस किस तरह बदल रहा है। किसी दल या व्यक्तिके पास आज भूदान जैसा कोअी क्रान्तिकारी कार्यक्रम नहीं है। जवाहरलालजी कांग्रेसकी शुद्धि करना चाहते हैं। कृपलानीजी भी वही करना चाहते हैं और अुसके लिअे अुन्होंने अेक नया दल खड़ा किया है। लेकिन जब तक त्याग और बलिदानका कार्यक्रम नहीं दिया जाता, तब तक शुद्धीकरण नहीं हो सकता। गांधीजी जीवित होते और वे भी यदि त्यागका कोअी कार्यक्रम पेश नहीं करते, तो शुद्धीकरण असंभव रहता। लेकिन गांधीजीकी खूबी यही थी कि वे हमेशा त्यागकी प्रेरणा देनेवाला कार्यक्रम देते थे। भूदान-यज्ञके कार्यक्रममें यह प्रेरणा भरी पड़ी है, और अुसमें क्रान्तिका सन्देश है, जो सारी दुनियाका ध्यान अपनी ओर खींचेगा।

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

चीनसे

चीनका जितना अधिक मैं अवलोकन करता हूं, अुतनी ही अधिक अुनकी भावनाकी तारीफ करनेकी अिच्छा होती है। हांगकांगसे केंटन थोड़ा गरीब शहर है, पर यहांकी सफाअी भी हांगकांग जैसी ही ध्यान खींचनेवाली है। यहां न तो भिखारी ही दिखाअी दिये और न मक्खियां, कौअे और लावारिस कुत्ते। यहांकी सड़कें अेकदम साफ थीं। यहांकी सड़कों पर खड़ी वाहन-नियंत्रक पुलिस अपना मुंह और नाक कपड़ेसे ठीक अुसी तरह ढंक लेती है, जिस तरह कोअी बड़ा ऑपरेशन करते समय कोअी डॉक्टर अपना मुंह और नाक ढंक लेता है। रास्तेके वाहनोंमें साअिकिलें, साअिकिल-रिक्शा और बसोंकी ही प्रधानता थी। कुछ मोटरें भी दौड़ती हुअी दिखाअी देती थीं, पर मुख्यतः वे सरकारी मोटरें ही थीं। खानगी या किरायेसे चलनेवाली मोटरें कहीं दिखाअी नहीं देती थीं। हवाअी अड्डोंके स्थान झोंपड़ियों जैसे ही थे। और हवाअी जहाज अुतरनेके और चढ़नेके रास्ते कांक्रीटके न बने होकर, केवल डामरसे पुते थे।

सभी मामलोंमें पूरी सादगी थी। लोग करीब-करीब अेक ही स्तरके थे। कोअी खास अमीर नहीं दिखाअी देता था। केंटनकी दुकानोंके नामोंके तख्ते और अुनकी सजावट अिस ढंगसे और अितने विविध रंगोंमें की गअी थी कि अैसा मालूम होता था मानो किसी त्यौहारके लिअे यह खास सजावट की गअी हो। केंटन हमारे कलकत्ते जैसा काफी बड़ा शहर है। यहां आपको कोअी जमीन बेकार पड़ी हुअी नहीं दिखाअी देगी। शहरकी चप्पा-चप्पा जमीनका कोअी न कोअी अुपयोग किया गया आपको दिखाअी देगा। हिन्दुस्तानियोंके विपरीत यहांके लोग बहुत मेहनती हैं। मैं जब यहांकी गरीब बस्तियोंमें घूमने निकला, तब हरअेक घरमें मैंने देखा कि घरकी मातायें स्वयं अपने बच्चोंको नहला-धुला रही हैं।

यहां सब जगह अन्न और जीवनकी बुनियादी जरूरतोंकी बहुतायत है और वे बहुत सस्ते दामोंमें मिलती हैं। यहां पर भी मुद्रास्फीति है, पर अुसका मुकाबला करनेके लिअे सरकारने कारगर तरीके अख्तियार किये हैं। यहांका शासनतंत्र समझदार है और अुसे लोगोंका सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त है, क्योंकि अुसके और आम जनताके मकसदोंमें कोअी फर्क नहीं है। यहांके सब लोगोंकी पोशाक अेक ही किस्मकी और रहन-सहन भी अेकसी ही है। सबसे अधिक अमीर और सबसे अधिक गरीबमें विशेष अंतर नहीं है। यहांके राष्ट्राध्यक्ष माओको २८०० कट्टी बाजरा, रहनेके लिअे मकान और अिस्तेमाल करनेके लिअे अेक मोटरगाड़ी, अितना ही मिलता है। अेक कट्टी १.३ पौंडके करीब होती है। हमारे सिक्कोंमें यह सब मिलाकर माहवार ६०० रु० तक पड़ता है। मुझे राज्यके दो मंत्रियोंसे बातचीत करनेका मौका मिला था, जिन्हें मासिक ४५० रु० के करीब मिलता था। हम लोगोंकी देखभालके लिअे जो स्वयंसेवक हैं, अुन्हें अिससे करीब अेक तिहाअी वेतन मिलता है। अिस परसे आपको पता चल जायगा कि किस प्रकार चीनके नेता आम जनताका-सा जीवनयापन करते हैं। आज यहांके लोगोंमें जो भावना काम कर रही है, वह ठीक वैसी ही है जो सन् १९३१ में हिन्दुस्तानमें थी। हम जैसा सोचते हैं वैसा यहां रशियाका सम्पूर्ण आधिपत्य नहीं है। रशियाके साम्यवादकी बुनियाद बड़े पैमाने पर अुत्पादन और अुसका राष्ट्रीयकरण है, पर चीनको खानगी मिल्कियत (कुछ हद तक) और अुत्पादनका विकेंद्रीकरण मंजूर है। चीन जमीनके बन्दोबस्तमें संशोधन और खेतीमें सुधार करनेके पक्षमें है। अिस मूलगामी फर्कके कारण चीन रशियाका अंधानुकरण नहीं कर सकता। यहांकी वेतन निर्धारित करनेकी बुनियाद करीब वैसी ही है, जैसी कि मैंने सेलडोहमें अख्तियार की है। यहां नौकरोंको मकान, कपड़े और खुराक मुफ्त दी जाती है और १० रु० से १५ रु० के करीब नकद मासिक दिया जाता है। मेरी पद्धति अधिक शास्त्रशुद्ध कहनी होगी, क्योंकि अुसकी बुनियाद संतुलित आहार मयस्सर करानेकी है। पर दोनोंका साम्य झट खयालमें आये बिना नहीं रहता।

आपने कृषि-सुधारके बारेमें पूछा है। अिस दिशामें अुन्होंने अत्यन्त व्यावहारिक दृष्टि अपनाअी है।... परपुष्ट जमींदारी प्रथा तो नष्ट कर दी गअी है, लेकिन खुदकाश्त करनेवाले मालदार किसान कायम रखे गये हैं। अब तक किसान जमींदारको अुत्पादनका ५० से १०० प्रतिशत अुसके हिस्सेके रूपमें दे दिया करता था। पर अब यह हालत बदल गअी है और किसान अपनी मेहनतके फलका पूरा हकदार हो गया है। जमीनका लगान अुपजका लगभग १३ प्रतिशत होता है और सब लगान अुपजके रूपमें ही वसूल किया जाता है। मुद्रास्फीति रोकनेका यह सबसे अधिक कारगर तरीका है। सरकारी शिक्षकों और फौजी सिपाहियोंको भी अनाजके रूपमें ही वेतन दिया जाता है। जमींदारोंने सशस्त्र बलवा किया था, जिसको दबानेके लिअे काफी सख्ती अख्तियार की गअी थी; अन्यथा लोगोंमें आतंक पैदा नहीं किया जाता। जमींदारोंकी जमीनें जप्त कर ली गअीं, पर जो लोग खुद खेती करनेके लिअे राजी थे, अुनके पुनर्वसनके लिअे अुन्हें अुतनी ही जमीन दी गअी जितनी कि अन्य किसानोंको दी जाती थी।

केंटनमें अुन्होंने कुछ ही महीनोंके भीतर तमाम वेश्याओंको किसी न किसी अुत्पादन कार्यमें लगाकर वेश्या-व्यवसाय ही नष्ट कर दिया है।

[श्री जो० कॉ० कुमारप्पा द्वारा श्री जी० रामचन्द्रनको चीनसे लिखी हुअी चिट्ठियोंमें से।]

(अंग्रेजीसे)

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : **किशोरलाल मशरूवाला**

अनु० **सोमेश्वर पुरोहित**

कीमत १–१२–०

डाकखर्च ०–४–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

तेलंगाना भूदान यज्ञका महत्त्व

भूमिहीन गरीबोंको जमीन दिलानेके लिअे विनोबाजीने जो यज्ञ आरम्भ किया है, सन्तोषकी बात है कि अुसका हरअेक पक्षकी तरफसे स्वागत हो रहा है। हैदराबाद सरकारने भी अिस कामको आसान करनेके लिअे आवश्यक कानून बनाकर काफी मदद पहुंचायी है। अिस कानूनके अनुसार दानपत्रमें स्टाम्प और रजिस्ट्री आदिकी आवश्यकता नहीं रही। तदर्थ सरकारको धन्यवाद देना चाहिये।

बंटवारेका काम अगस्तके आखिरी सप्ताहमें शुरू किया गया। काम बारह दिन चला और अिस अरसेमें ५२५ अेकड़ जमीन, जिसमें २६ अेकड़ तरीकी जमीन शामिल है, १००से अधिक कुटुम्बोंको बांटी गअी। अिनमें अेक मुसलमान भाअीका कुटुम्ब भी है। अितने अनुभवसे ही यह मालूम हो गया कि बंटवारेका काम कठिन है, क्योंकि जमीन कम है और पात्र ज्यादा हैं।

अिस कठिनाअीको हल करनेके लिअे फिलहाल हम लोगोंने यह अुपाय-योजना की है। गांवमें जाकर पहले हम जमीनके अधिकारी पात्रोंकी अेक सूची बना लेते हैं। फिर देखते हैं कि अुनके घरमें खेतीके पशु कितने हैं और खेती करनेवाले व्यक्ति कितने हैं। जमीन व्यक्तियोंकी संख्याके अनुसार दी जाती है। नियम यह है कि अेक कुटुम्बको अेक अेकड़ तरी या फी व्यक्ति अेक अेकड़ खुश्की जमीन दी जाय। जमीन अगर कौलदारके अधीन हो, तो बंटवारेमें वह अुसे ही दी जाती है।

अिस कामका महत्त्व धीरे-धीरे प्रगट हो रहा है। लोग यह समझ रहे हैं कि जमीन प्रकृतिकी दी हुअी सम्पत्ति है और सबका अुस पर समान अधिकार होना चाहिये। यह यज्ञ अेक ओर तो अिस तत्त्वके व्यावहारिक प्रयोगका मौका देता है, दूसरी ओर वर्ग-विग्रह आदि आपसी झगड़ोंका डर दूर करता है। चन्द लोगोंका यह खयाल था कि दान दी हुअी जमीन या तो बेकार होगी या झगड़ेमें पड़ी हुअी होगी। मेरे पास अैसी सिर्फ अभी तक दो शिकायतें आअी हैं: अेकमें अेक भाअीने दूसरे भाअीको पूछे बिना जमीन दे दी थी, दूसरीमें दी हुअी जमीन बेकार मालूम हुअी। लेकिन दाताको कहने पर अुसने दूसरी जमीन देना स्वीकार किया।

जो भी हो, यह स्पष्ट है कि बेजमीन किसानोंका सवाल हल करनेके लिअे अिससे बढ़कर और कोअी अुपाय नहीं हो सकता था। कम्युनिस्ट भाअियोंने हत्या और विध्वंसका काम तो काफी किया, लेकिन समस्याका कोअी रचनात्मक हल नहीं बताया। नालगोंडा और वारंगलमें अुनकी लूटमार चलते हुअे पांच वर्ष हो गये, लेकिन जनतामें दीनता और आतंक पैदा करनेके सिवा अिस आन्दोलनका और कोअी परिणाम नहीं हुआ।

दूसरा अुपाय यही हो सकता था कि सरकार कानून बनाये और जिनके पास अेक सीमासे ज्यादा जमीन है, अुनसे लेकर वह बेजमीन किसानोंको बांट दे। लेकिन अिन निर्धन और निरुपाय किसानोंकी तात्कालिक सेवाका दानके सिवा और क्या अुपाय हो सकता था? विनोबाजीके जानेके बाद २,००० अेकड़ भूमि और मिली है, यह कोअी मामूली बात नहीं है। थोड़े लोगोंको सही, पर बिना दरख्वास्त किये या न्यायालयमें जाये जमीन मिल तो जाती है। फिर, अिसमें जमीन देनेवाला और लेनेवाला दोनों अपनेको भाग्यवान् समझते हैं, अैसा पवित्र और क्रांतिकारी महत्त्वका यह काम है।

यह काम कोअी भी व्यक्ति किसी भी जगह आरम्भ कर सकता है। मैं हरअेक व्यक्तिसे, अुसका राजकीय दृष्टिकोण कुछ भी हो, अिस प्रशस्त कार्यमें सहायताकी विनती करता हूं।

केशवराव
सभ्य, भूदान-यज्ञ-समिति, हैदराबाद

बुनियादी हल

बचपनमें मुझे हर कोअी यही सिखाता था कि भारत सुख, शांति तथा भौतिक और नैतिक समृद्धिका देश है। लेकिन ज्यों-ज्यों मैं बड़ा हुआ, त्यों-त्यों मैंने देखा कि यहां दुःख, दरिद्रता, संघर्ष और अनीति भरी पड़ी है। अिस बातसे मुझे जबरदस्त चोट लगी, और मैं तभीसे अिस हालतको बदलनेके अुपाय सोचता रहा हूं। मैं जानता हूं कि अिसका कोअी आसान अुपाय नहीं है। लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि अगर भारतको जिन्दा रहना है, तो अैसे अुपाय ढूंढ़ने ही पड़ेंगे।

अिस अंधेरेमें प्रकाशकी पहली झांकी मुझे गांधीजीसे मिली। लेकिन जब मुझे श्री कुमारप्पाजीके कामका और अुनकी रचनाओंका ज्ञान हुआ, तब मुझे निश्चयपूर्वक यह महसूस हुआ कि मेरे मनके कअी सवालोंका जवाब मुझे मिल गया है।

भारतमें विश्वविद्यालयकी सर्वोच्च शिक्षा मैंने पायी है, और पश्चिममें भी काफी तालीम ली है। मेरा दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं है। लेकिन मेरा यकीन है कि जब तक हम अपनी जमीनका पूरा और अुत्तम अुपयोग नहीं करते, तब तक हमारा भविष्य अुज्ज्वल नहीं हो सकता। मैं औद्योगिक विकासके खिलाफ नहीं हूं। लेकिन केन्द्रीय स्थान खेती और खेतीके अुद्योगोंको देना होगा, और अिस अर्थ-रचनाके साथ औद्योगिक विकासका मेल साधना पड़ेगा।

हमारी सबसे बड़ी पूंजी हमारी जमीन और हमारा मनुष्य-बल है। हमें अिन दोनोंका पूरा और अैसा अुपयोग करना चाहिये कि मेहनत करके अुत्पादन करनेवाले हरअेक व्यक्तिकी आर्थिक अुन्नति हो और अुसे सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिले। अिसके लिअे किसी खूनी क्रांति और सिर-फुड़ौवलकी जरूरत नहीं है। केवल धैर्यपूर्वक अपनी जनताको यह सिखाना है कि जमीनका और मनुष्य-बलका पूरा अुपयोग ही हमारी समृद्धि और सुख-शांतिकी सही कुंजी है। हमें यह बताना है कि लाखों गरीबोंका हित जिस बातमें है, अुसीमें चंद मालदारोंका भी है।

गांधीजीने यही किया था, और आज श्री कुमारप्पाजी और श्री विनोबाजी भी यही कर रहे हैं। हमें अुनके ही नेतृत्वमें चलना है। आधुनिक यंत्र-विज्ञानको भूलना नहीं है, लेकिन अपने देशकी परिस्थितियोंका खयाल करना है और अिस विज्ञानकी योजना अपने देशके हितमें करना है। हमें न तो रूढ़ियोंके पीछे चलना है, न किसीका अंध अनुकरण ही करना है। अपनी समस्याओंके हलके लिअे खुद आगे बढ़ना है और अपना रास्ता खुद बनाना है।

पी० के० सेन

(नवम्बर १९५१ की 'ग्रामोद्योग पत्रिका' से)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–४–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

विषय–सूची

		पृष्ठ
डमडमकी करुण दुर्घटना	कि० घ० मशरूवाला	३४५
हड्डियोंका निर्यात – १	कि० घ० मशरूवाला	३४५
महारोगियोंकी सेवामें नया कदम	जो०	३४६
किसानोंको तकाबी	कि० घ० मशरूवाला	३४८
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा – ६	दा० मूं०	३४९
चीनसे	जो० कॉ० कुमारप्पा	३५१
तेलंगाना भूदान-यज्ञका महत्त्व	केशवराव	३५२
बुनियादी हल	पी० के० सेन	३५२

www.vinoba.in